

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 7th



aglasem.com

Class : 7th

Subject : इतिहास

Chapter : 5

Chapter Name : शासक और इमारतें

Q1 वास्तुकला का 'अनुप्रस्थ टोडा निर्माण' सिद्धांत 'चापाकार' सिद्धांत से किस तरह भिन्न है ?

Answer. जब हम एक विस्तृत आधी रचना वाले विशाल कक्ष का निर्माण करना चाहते हैं तो इसके लिए हमें अधिक परिष्कृत कौशल की जरूरत होती है।

- सातवीं और दसवीं शताब्दी के मध्य वास्तुकार भवनों में और अधिक कमरे, दरवाजे और खिड़कियां बनाने लगे।
- छत, दरवाजे और खिड़कियां अभी भी दो ऊर्ध्वाधर खंभों के आरपार एक अनुप्रस्थ शहतीर रखकर बनाए जाते थे।
- वास्तु कला की यह शैली 'अनुप्रस्थ टोडा निर्माण' कहलाई जाती है। आठवीं से तेहरवीं शताब्दी के बीच मंदिरों, मस्जिदों, मकबरों तथा सीढ़ीदार कुओं (बावली) से जुड़े भवनों के निर्माण में इस शैली का प्रयोग हुआ।

12वीं शताब्दी में प्रौद्योगिकीय एवं शैली संबंधी परिवर्तन दिखाई पड़ने लगते हैं-

- दरवाजों और खिड़कियों के ऊपर की अभिरचना का भार कभी-कभी मेहराबों पर डाल दिया जाता था।
- वास्तु कला में इसे चापाकार कहा जाता था।
- निर्माण कार्य में चूना पत्थर सीमेंट का प्रयोग बढ़ गया।
- यह उच्च श्रेणी की सीमेंट होती थी, जिसमें पत्थर के टुकड़ों को मिलाने से कंक्रीट बनती थी। इसी वजह से विशाल ढांचों का सरलता से और तेजी से होने लगा।

Page : 73 , Block Name : फिर से याद करें

Q2 'शिखर' से आपका क्या तात्पर्य है?

Answer. शिखर मंदिर का सबसे ऊपरी भाग होता है , जिसके नीचे गर्भगृह होता है। तंजावुर के राजराजेश्वर मंदिर का शिखर, उस समय के मंदिरों में सबसे ऊंचा था। इसका निर्माण कार्य आसान नहीं था, क्योंकि उन दिनों कोई सुलभ व्यवस्था नहीं थी जिससे पत्थरों को उस ऊंचाई पर ले जाया जा सके। शिखर के शीर्ष पर 90 टन का पत्थर ले जाना इतना भारी होता था क्यू से व्यक्ति अपने आप उठाकर नहीं ले जा सकता था। इसलिए इस काम के लिए वास्तुकारों ने मंदिर के शीर्ष तक पहुंचने के लिए चढ़ाई दार रास्ता बनवाया। रोलरों द्वारा भारी पत्थरों को ऊपर ले जाया गया। इस काम के लिए 4 किलोमीटर से भी ज्यादा लंबा पथ तैयार किया जाता था, चढ़ाई बहुत खड़ी ना हो। मंदिर बन जाने के बाद इसे गिरा दिया जाता था।

Page : 73 , Block Name : फिर से याद करें

Q3 'पितरा-दूरा' क्या है?

Answer. शाहजहां के शासनकाल में अनवरत निर्माण कार्य चलते रहे, विशेष रूप से आगरा और दिल्ली में, सार्वजनिक और व्यक्तिगत सभा हेतु समारोह कक्षों(दीवान ए खास और दीवान ए आम) की योजना बहुत सावधानीपूर्वक बनाई जाती थी। शाहजहां के सभा भवन मस्जिद से मिलते जुलते बनाए गए थे। उसका सिंहासन जिस मंच पर रखा था उसे पराया किबला(नमाज के दौरान मुसलमानों के सामने की दिशा) कहा जाता था क्योंकि जिस समय दरबार चलता था कुछ समय प्रत्येक व्यक्ति उस ही मुख करके बैठता था। शाहजहां ने दिल्ली के लाल किले के अपने नवनिर्मित दरबार में राजकीय न्याय ही दरबार के अंतःसंबंध पर बहुत बल दिया। बादशाह के सिंहासन के पीछे पितरा दूरा (उत्कीर्णित संगमरमर अथवा बलुआ पत्थर पर रंगीन ठोस पत्थरों को दबाकर बनाए गए सुंदर तथा अलंकृत नमूने) के जड़ाऊ काम की एक श्रृंखला बनाई गई थी। जिसमें पौराणिक यूनानी देवता आर्फ़ियस को वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया था।

Page : 73 , Block Name : फिर से याद करें

Q4 एक मुगल चारबाग की क्या खास विशेषताएँ हैं?

Answer. मुगलों के अधीन वास्तुकला और जटिल हो गई। बाबर हुमायूं अकबर जहांगीर और विशेष रूप से शाहजहां, साहित्य, कला और वास्तुकला में व्यक्तिगत लेते थे। बाबर ने अपनी आत्मकथा में अपनी रुचि का वर्णन किया है। बाग दीवार से घिरे होते थे तथा कृत्रिम नहरों द्वारा चार भागों में विभाजित आयात कर आहाते में स्थित थे। औपचारिक बागों की योजनाओं और उनको बनाने तथा खाका तैयार करने में बाबर ने

अपनी आत्मकथा में वर्णन किया है। चार समान हिस्सों में बटे होने के कारण यह चारबाग कहलाते थे। चारबाग बनाने की परंपरा अकबर के समय से शुरू हुई। अकबर के शासन काल में कई तरह के महत्वपूर्ण वास्तु कलात्मक नवाचार शुरू हुए। इनकी प्रेरणा अकबर के वास्तुशिल्पियों ने उसके मध्य एशियाई पूर्वज तैमूर के मकबरे से ली। हुमायूँ के मकबरे में दिखने वाला केंद्रीय गुंबद, और ऊंचा मेहराबदार प्रवेश द्वार (पिश्तक) मुगल वास्तुकला के महत्वपूर्ण रूप बन गए। कुछ सर्वाधिक सुंदर चारबागों को कश्मीर, आगरा और दिल्ली में जहांगीर और शाहजहां ने बनवाया था।

Page : 73 , Block Name : फिर से याद करें

Q5 किसी मंदिर से राजा की महत्ता की सूचना कैसे मिलती थी?

Answer. राजा, मंदिरों का निर्माण अपनी शक्ति, धन संपदा और ईश्वर के प्रति निष्ठा के प्रदर्शन हेतु करते थे। ऐसे में यह बात आश्चर्यजनक नहीं लगती है कि जब उन्होंने एक दूसरे के राज्य पर आक्रमण किया तो उन्होंने प्रायः ऐसी इमारतों पर निशाना साधा।

गजनी का सुल्तान महमूद राजेंद्र प्रथम का समकालीन था। भारत में अपने अभियानों के दौरान उसने पराजित राजाओं के मंदिरों को अपवित्र किया तथा उनके धन और मूर्तियों को लूट लिया। उस समय सुल्तान महमूद कोई बहुत महत्वपूर्ण शासक नहीं था, लेकिन मंदिरों को नष्ट करके- खासतौर से सोमनाथ का मंदिर- उसने एक महान इस्लामी योद्धा के रूप में श्रेय प्राप्त करने का प्रयास किया। मध्ययुगीन राजनीतिक संस्कृति में ज्यादातर शासक अपने राजनैतिक बल व सैनिक सफलता प्रदर्शन पराजित शासकों के उपासना स्थलों पर आक्रमण करके और उन्हें लूटकर करते थे।

Page : 73 , Block Name : आइए समझें

Q6 दिल्ली में शाहजहाँ के दीवान-ए-खास में एक अभिलेख में कहा गया है - ' अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है , यहीं है , यहीं है?' यह धारणा कैसे बनी?

Answer. शाहजहाँ के काल में वास्तु कला के अलग-अलग तत्व एक विशाल सद्भाव का संश्लेषण कर रहे थे। शाहजहाँ के समय लगातार निर्माण चलता रहा खासकर आगरा और दिल्ली में। सार्वजनिक और व्यक्तिगत सभा के लिए अलग-अलग भवन का निर्माण किया जाता था जैसे दीवान ए खास और दीवान ए आम। एक विशाल आंगन में स्थित ये दरबार चिहिल सुतुन अथवा 40 खंभों के सभा भवन भी कहलाते थे।

शाहजहां के सभा भवन विशेष रूप से मस्जिद मिलते जुलते बनाये जाते थे। उसका सिंहासन जिस मंच पर रखा था उसे क़िबला कहा जाता था क्योंकि जिस समय दरबार चलता था उस समय प्रत्येक व्यक्ति कुछ और ही मुंह करके बैठता था। इन वास्तुकलात्मक अभिलक्षणों का इस ओर इशारा था कि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि था। लाल किले में नवनिर्मित भवनो में न्याय और शाही दरबार के अंतः संबंध पर जोर दिया जाता था। सिंहासन के पीछे पितरा दूरा के जड़ाऊ काम की एक श्रृंखला बनाई जाती थी, जिसमें पौराणिक यूनानी देवता आर्कियस को वीणा बजाते हुए अंकित किया गया था। ऐसा माना जाता था कि उनके संगीत से आक्रमक जानवर भी शांत हो जाते थे। शाहजहां के सार्वजनिक सभा भवन का निर्माण बताता है कि न्याय करते समय राजा ऊंचे और निम्न सभी प्रकार के लोगों के साथ समान व्यवहार करेगा और सभी सद्भाव के साथ सकेंगे। इन्हीं सब विशेषताओं और वास्तु कला की सोच वजह से यह धारणा बनी होगी।

Page : 73 , Block Name : आइए समझें

Q7 मुगल दरबार से इस बात का कैसे संकेत मिलता था कि बादशाह से धनी , निर्धन , शक्तिशाली , कमज़ोर सभी को समान न्याय मिलेगा?

Answer. शाहजहां ने दिल्ली के लाल किले के अपने नवनिर्मित दरबार में राजकीय न्याय और शाही दरबार के अंतर्संबंध पर बहुत बल दिया। बादशाह के सिंहासन के पीछे पितरा दूरा के जड़ाऊ काम की एक श्रृंखला बनाई गई थी, जिसमें पौराणिक यूनानी देवता आर्कियस को वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया था। ऐसा माना जाता था आर्कियस का संगीत आक्रमक जानवरों को भी शांत कर सकता है और वे शांतिपूर्वक एक दूसरे के साथ कहने लगते हैं। शाहजहां के सार्वजनिक सभा भवन का निर्माण यह सूचित करता था कि न्याय करते समय राजा ऊंचे और नीचे सभी प्रकार के लोगों के साथ समान व्यवहार करेगा और सभी सद्भाव के साथ रह सकेंगे। शाहजहां के सार्वजनिक सभा भवन का निर्माण बताता है कि न्याय करते समय राजा ऊंचे और निम्न सभी प्रकार के लोगों के साथ समान व्यवहार करेगा और सभी सद्भाव के साथ सकेंगे। इन्हीं सब विशेषताओं और वास्तु कला की सोच वजह से यह धारणा बनी होगी। शाहजहां के काल में वास्तु कला के अलग-अलग तत्व एक विशाल सद्भाव का संश्लेषण कर रहे थे।

Page : 73 , Block Name : आइए समझें

Q8 शाहजहाँनाबाद में नए मुगल शहर की योजना में यमुना नदी की क्या भूमिका थी?

Answer. शासन के आरंभिक वर्षों में शाहजहां की राजधानी आगरा थी। इस शहर में विशिष्ट वर्गों ने अपने घरों का निर्माण यमुना नदी के तट पर करवाया था। इनका निर्माण चारबाग की रचना के ही समान औपचारिक बागों के बीच में हुआ था। चारबाग की योजना के अंतर्गत ही अन्य तरह के बाद भी थे जिन्हें

इतिहासकार 'नदी तट बाग' कहते हैं। इस तरह के बाग में निवास स्थान, चारबाग के बीच में स्थित ना होकर नदी तटों के पास बाघ के बिल्कुल किनारे पर होता था।

शाहजहां ने अपने शासन की भव्यतम वास्तुकलात्मक उपलब्धि ताजमहल के नक्शे में नदी तट बाग योजना अपनाई। यहां सफेद संगमरमर का मकबरा नदी तट के एक चबूतरे पर प्रताप बाग इसके दक्षिण में बनवाया था। नदी पर सभी अभिजातों की पहुंच पर नियंत्रण हेतु शाहजहां ने इस वास्तुकलात्मक रूप को विकसित किया। दिल्ली में शाहजहानाबाद में उसने जो नया शहर निर्मित करवाया उसमें शाही महल नदी पर स्थित था। केवल विशिष्ट कृपा प्राप्त अभिजातों, जैसे- उसके बेटे दारा शिकोह को ही नदी तक पहुंच मिली थी। अन्य सभी को अपने घरों का निर्माण यमुना नदी से दूर शहर में करवाना पड़ता था।

Page : 73 , Block Name : आइए समझें

Q9 आज धनी और शक्तिशाली लोग विशाल घरों का निर्माण करवाते हैं। अतीत में राजाओं तथा उनके दरबारियों के निर्माण किन मायनों में इनसे भिन्न थे?

Answer. शक्तिशाली विशाल घरों और इमारतों का निर्माण संबंधी गतिविधियों के कारण क्षेत्रों के बीच का भी आदान-प्रदान हुआ। एक क्षेत्र की परंपराएं दूसरे क्षेत्र द्वारा अपनाई गईं। उदाहरण के लिए, विजय नगर में राजाओं की गज शालाओं पर बीजापुर और गोलकुंडा जैसी आसपास की सल्तनतों की वास्तु कलात्मक शैली का प्रभाव पड़ा था। जबकि आज के धनी लोग सिर्फ अपनी श्रेष्ठता और कीर्ति को स्थापित करने के लिए ही भवनों का निर्माण करवाते हैं।

Page : 73 , Block Name : आइए विचार करें

Q10 चित्र 4 पर नजर डालें। यह इमारत आज कैसे तेजी से बनाई जा सकती है?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 73 , Block Name : आइए विचार करें

Q11 पता लगाएं कि क्या आपके गांव या कस्बे में किसी महान व्यक्ति की कोई प्रतिमा अथवा स्मारक है? इसे वहां क्यों स्थापित किया गया था? इसका प्रयोजन क्या है?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 73 , Block Name : आइए विचार करें

Q12 अपने आसपास के किसी पार्क या बाग की सैर करके उसका वर्णन करें। किन मायनों में यह मुगल बागों के सामान अथवा भिन्न है?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 73 , Block Name : आइए विचार करें

aglasem.com